



॥ गावो विश्वस्य मातरः ॥ श्रीकृष्णायन



गो सेवा में छुपी है

जन कल्याण की भावना

हमारे धर्म ग्रंथों में यह लिखा है कि, 'मां' शब्द हमारी गो माता की ही देन है, सबसे पहले बछड़े ने 'मां' शब्द बोला था। संसार का सबसे सुन्दर शब्द 'मां' हमारी जन्मदात्री मां जो साल दो साल हमें दूध पिलाती है और जीवन भर हम उनका कर्ज नहीं चुका पाते तो गो माता का दूध तो हम जीवन भर पीते हैं इसलिए उनका कर्ज जीवन के बाद भी चुका पाना संभव नहीं है।

हम गो माता की जितनी भी सेवा करें, पूजा करें कम ही होगी क्योंकि ईश्वर का साक्षात स्वरूप गो माता हैं हमारे वेद-पुराणों में कहा गया है कि- 'सर्व देवाः स्थिता देहे, सर्वदेवमयी हि गोः' केवल एक गो माता की पूजा

और सेवा करने से सभी 33 कोटि देवी-देवताओं की पूजा संपन्न हो जाती है। गो सेवा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त करने का सुलभ, सरल, वैज्ञानिक और सर्वश्रेष्ठ साधन है।

हमारी संस्कृति 4 स्तंभों पर टिकी है जिनके नाम हैं, गो, गंगा, गायत्री, गीता ये चारों भारतीय संस्कृति के स्तंभ हैं।

भक्ति, मुक्ति और शक्ति का स्रोत गो सेवा

'लक्ष्मी गोमये नित्यं पवित्रा सर्व मंगलो' गाय के गोबर और गोमूत्र में पवित्र सर्व मंगलमयी श्री लक्ष्मी जी का निवास है, जिसका अर्थ यह है कि

गोबर और गोमूत्र में सारी धन-सम्पदा समायी हुई है। लोकल्याण के लिए किया गया प्रत्येक कर्म यज्ञ स्वरूप है कम ग्रहण करना और अधिक देने वाले इस आचरण को सिखाने वाली हमारी लोककल्याणकारी गो माता ही है। गाय घास, भूसा, छिलका, खली, चुनी तथा चोकर आदि ऐसी सामान्य खाद्य सामग्री ग्रहण करती है जो मनुष्य के ग्रहण करने योग्य नहीं है और कम मूल्यवान होती है, किन्तु बदले में अमृत तुल्य दूध, अत्यंत उपयोगी और औषधिरूपी गोमय तथा गोमूत्र देती है।

गुजरात जूनागढ़ यूनिवर्सिटी द्वारा लेबोरेटरी में 7 साल के प्रयोगों के बाद आज यह सिद्ध हो गया है कि गोदुग्ध और गोमूत्र में सोना पाया जाता है दो-तीन गायें एक परिवार की परवरिश कर सकती हैं इनसे प्राप्त गोबर, गोमूत्र, एवं गोदुग्ध का समुचित उपयोग करने पर इतनी आय हो सकती है कि एक परिवार की परवरिश हो सके।

पंचगव्य से 108 रोगों का सफल इलाज होता है गोमूत्र से बनी दवाओं से हजारों रुपए प्रति माह आय हो सकती है एक दूध न देने वाली गाय या बैल भी उपयोगी है, वो जितना चारा ग्रहण करते हैं उससे 5 गुना मूल्य का खाद बनाने लायक गोबर उनसे प्राप्त हो जाता है।

नेडेप की स्थापना

श्री नारायण देव राव पांडरी पाण्डे का 25 वर्ष का श्रम बड़ा ही उपयोगी साबित हुआ है उन्होंने नेडेप विधि खोजकर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, इस



विधि से केवल एक किलो गोबर से तीस किलो सर्वोत्तम श्रेणी की खाद बनती है। इसके प्रयोग से विदेशी मुद्रा की बचत होगी तथा धरती बंजर होने से बचेगी ये अटल सत्य है कि 'गावः सर्वसुखप्रदाः' अर्थात् गाय सब सुखों को देने वाली है

हमारे देश में दिन-प्रतिदिन बेरोजगारी और गंभीर बीमारियां जैसी समस्याएं बढ़ती जा रही हैं इसलिए गो रक्षा एवं गो-संवर्द्धन आज देश की धार्मिक, आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, प्राकृतिक, नैतिक, व्यवहारिक, लौकिक एवं पारलौकिक अनिवार्य आवश्यकता है। गो, गीता, गायत्री और गंगा ये चार सनातन देव संस्कृति के स्तम्भ हैं और आज इनकी स्थिति दयनीय हो गई है। गंगा प्रदूषित हो रही है, गायत्री के दर्शन को व्यवहार में नहीं लाया जा रहा, गीता के उपदेश को जीवन में उतारा नहीं जा रहा और सब सुखों को देने वाली हमारी गो माता का वध किया जा रहा है। हमारे सभी दुखों के

गो- दुग्ध लाभदायक प्रोटीन का स्रोत

गाय के दूध में दो तरह का प्रोटीन पाया जाता है व्हे प्रोटीन (Whey protein) व कैसीन प्रोटीन (Casein protein)।

कैसीन प्रोटीन भी दो प्रकार का होता है अल्फा कैसीन व बीटा कैसीन। बीटा कैसीन भी दो रूपों में पाया जाता है एक A1 व A2। बीटा कैसीन प्रोटीन एक उच्च कोटि प्रोटीन होता है जिससे न केवल अमीनो-अम्ल की आपूर्ति होती है बल्कि ये गायों में कैल्शियम अवशोषण में भी सहायक होता है। देशी गायों में A2 बीटा कैसीन के जीन पाए जाते हैं और इनका दूध A2 किस्म का होता है जबकि विदेशी नस्ल की गायों के दूध में A1 प्रोटीन मिलती है। कुछ शोधकर्ताओं के अनुसार A1 बीटा कैसीन युक्त दूध पीने व हृदयरोग, मधुमेह व स्नायु-तंत्र सम्बन्धित रोगों के मध्य गहरा संबंध बताया गया है। कुछ लोग लैक्टोज के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं तथा वे A1 दूध को पचा नहीं पाते, ऐसे लोगों को A2 दूध से लाभ होता है।

यही कारण है। हम सब इस से अनजान नहीं हैं कि गो-रक्षा से बढ़कर कोई धर्म नहीं गो-पालन, गो-सेवा मानवीय सद्गुणों के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। गायों के पालनहार श्री कृष्ण का गो प्रेम हम सभी जानते हैं, गो दुग्ध का पान कर उन्होंने दिव्य गीतामृत का संदेश दिया- 'दुग्धं गीतामृतं महते' रघुवंश जिसमें भगवान श्री राम का जन्म हुआ था, गाय की सेवा से ही चला था। हमारे धर्म ग्रंथों में यह वर्णित है कि गो-सेवा ही मनुष्य के स्वर्ग जाने का माध्यम है, इसलिए मनुष्य के अंतिम संस्कार के क्रिया-कर्म में पंचदान की परम्परा है जिसमें से एक दान गो-दान भी है सिर्फ हिन्दू धर्म ही नहीं बल्कि सभी धर्मों में गो की महत्ता और गो रक्षा की बात कही गई है।

सभी धर्म गो-सेवा की बात कहते हैं

कुरान शरीफ के अनुसार- अकर्मल बकर फाइनहा सैयदूल बहाइसां अर्थात्- गाय की इज्जत करो क्योंकि वह चौपायों का सरदार है गाय का दूध, घी और मक्खन [शिफा] अमृत है गोस्त बीमारियों का कारण है [कुरान



शरीफ पारा १४ रुकवा ७-१५]

ईसाई धर्म के अनुसार- ईसा मसीह ने कहा है- 'तू किसी को मत मार तू

मेरे समीप पवित्र मनुष्य बनकर रहे एक बैल या गाय को मारना एक मनुष्य के कत्ल के समान है' ईसाई हयाद ६६-३

सिख धर्म के अनुसार-

यही देव आज्ञा तुर्क, गाहे खपाऊं।

गड घात का दोष जग सिउ मिटाऊं।।

सरकार ने गो-रक्षा के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, महाराष्ट्र सरकार ने हाल ही में पूरी तरह से गो वंश हत्या पर प्रतिबन्ध लगाने में सफलता प्राप्त की। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह का कहना है कि- 'जो लोग गो हत्या करते हैं उन्हें वैसी ही सजा मिलनी चाहिए जैसी हत्या के अपराधी को।'

अतः किसी भी धर्म के व्यक्ति हों, हम सबका कर्तव्य है कि तन, मन, धन लगाकर गो हत्या पूर्ण रूप से बंद कराएं आज जरूरत है सरकार और सामाजिक संगठनों को मिलकर गो रक्षा के लिए नीचे दी गई योजनाओं को कार्यान्वित करने की।

- गो हत्या पूर्ण रूप से बंद किया जाए।
- गो हत्या, गो मांस खाने वाले तथा पशुओं की तस्करी करने वाले देशद्रोही हैं, इन्हें कड़ी-से-कड़ी सजा मिले।
- किसी मनुष्य की हत्या से बड़ा अपराध गो हत्या है, हत्यारे के लिए जिस सजा का प्रावधान है गो हत्यारे को भी वही सजा मिले।
- पूरे देश में ज्यादा-से-ज्यादा गोशालाओं की व्यवस्था की जाए जिससे लावारिश गायों की देखभाल की जा सके, सरकार गोशालाओं से युवाओं को जोड़ने के लिए उचित वेतन की



व्यवस्था करे।

- गो संवर्धन साहित्य का प्रचार-प्रसार किया जाए, सभी स्कूलों में इस विषय को नैतिक शिक्षा से जोड़ा जाये जिससे वर्तमान पीढ़ी तथा आने वाली पीढ़ी में गायों के प्रति प्रेम तथा सम्मान की भावना जागृत किया जा सके।
- एक कार्य जो हम सभी के वश में है, सभी कर सकते हैं वो ये कि पोलीथिन का प्रयोग ना करें खास तौर पर पोलीथिन में खाद्य सामग्री



गाय के गोबर से बनी चिप मोबाइल रेडिशन से बचाएगी

राष्ट्रीय कामधेनु आयोग ने एक ऐसी चिप लॉन्च की जो गाय के गोबर से बनी है। साथ ही आयोग ने यह दावा किया है कि इस चिप से मोबाइल सेट्स से निकलने वाले रेडिएशन से काफी हद तक बचा जा सकता है।



पक्के घरों को सेनिटाइज करने के लिए हो रहा है गोबर का उपयोग

दक्षिण भारत में घर-प्रतिष्ठानों के आंगन को गाय के गोबर से लीपने की परंपरा से प्रेरित होकर बुरहानपुर भी में भी अब पक्के घरों के प्रवेश द्वार और आंगन में गोबर का लेपन किया जा रहा है। यह इसलिए लोग जब उस पर से गुजरें, तो खुद भी संक्रमण मुक्त हों और परिसर भी संक्रमण से मुक्त रहे। पक्के घरों के आंगन लीपने के



लिए लोगों को आसानी से गोबर मिल जाए इसके लिए गाय प्रेमियों द्वारा स्थानीय क्षेत्र खड़कोद में स्थापित गो-विज्ञान केंद्र गोबर का पाउडर बनाकर लोगों को उपलब्ध करवा रहा है ताकि पानी या गोमूत्र में मिलाकर जब चाहें, वे इसका प्रयोग कर सकें। फिलहाल गो-विज्ञान केंद्र में छोटी चक्कीनुमा मशीन में सूखे उपलों को पीस कर गोबर पाउडर बनाया जा रहा है। एक माह में काऊ डंग डिवाटरिंग एंड पाउडर प्लांट लगाया जाएगा, जिससे गीले गोबर से तरल अलग कर गोबर को तुरंत सुखाकर पाउडर बनाया जाएगा। इसके बाद शहरी क्षेत्र में बड़े पैमाने पर गोबर का पाउडर उपलब्ध करवाया जा सकेगा।



रखकर इधर-उधर ना फेंके जिसे खाकर लाखों गायों की मृत्यु हो जाती है।



- गो माता के शरीर से सात्विक किरण विसरित होती है क्योंकि गाय स्वभाव से सात्विक, सौम्य, एवं संतोष करने वाली होती है गाय के प्रभाव क्षेत्र में रहने से मनुष्य की चित्तवृत्ति शांत होती है अतः गो संवर्द्धन करें।
- हरियाणा में गायों की पहचान के लिए आधार कार्ड बनाने का कदम उठाया गया है, पूरे देश के गायों के लिए आधार कार्ड बने



गोशाला की प्रमुख गतिविधियां

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति (हरिद्वार) की एक नई शाखा बनहारी (रानी घाट) में खुल गई है। करीब दस हजार देशी गोमाताओं की सेवा-क्षमता से लैस इस नई गोशाला के खुलने से अब और अधिक संख्या में देशी गायों की सेवा रक्षा की जा सकेगी।

उपलब्धियां

- गोमाता के भोजन और पोषण के लिए इस बार तीन सौ टन भूसा खरीदा गया है ताकि देशी गोवंश को वर्ष भर पौष्टिक आहार मिलता रहे।
- गोशाला के निकट रहने वाले निवासियों को इस आपातकाल के समय मुफ्त राशन का वितरण किया गया।
- गोमाताओं के लिए आवश्यक सुविधाओं से लैस 1500 देशी गायों के लिए 2 बड़े टीन शेड का निर्माण देशी गाय के संरक्षण और देखभाल के लिए एक ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन।

नई योजनाएं हुई साकार

- उत्तराखंड में पिली पड़ाव गोशाला
- रानीघाटी में बन्हेरी गोशाला
- गैंडीखाता, हरिद्वार में दो हजार देशी गायों के बैठने के लिए टीनशेड की व्यवस्था।

सभी दानदाताओं से अपील

कोराना वायरस की इस महामारी का असर सभी लोगों पर हुआ है। अर्थव्यवस्था से लेकर कामकाज तक पर इसका व्यापक असर हुआ है। इसके असर से सभी प्राणी प्रभावित हैं। हजारों गोमाताओं की सेवा के लिए जो दान आप दानवीरों द्वारा किया जा रहा था, वह इस समय अति-आवश्यक है। क्योंकि गोरक्षकों और गोमाताओं के भोजन का निर्वाह करना भी जरूरी है। हमारी आप सभी प्रबुद्धजनों और दानवीरों से यही अपील है कि संकट की इस घड़ी में धैर्य धारण करके सुरक्षित रहें और दान करते रहें क्योंकि संकट में दान देने वालों का प्रभु भी साथ देता है।

इस समय हमें आपके सहयोग की अति-आवश्यकता है, अतः आप स्वयं आगे बढ़ें और अपने परिचितजनों को भी गोसेवा करने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कम से कम एक गोमाता की सेवा का संकल्प लेकर ईसीएस फार्म भरकर मासिक/वार्षिक अपना सहयोग दें।

ताकि उनकी सुरक्षा हो सके।



- गायों की रक्षा के लिए कार्य करने वाले सामाजिक सगठनों को सरकार अनुदान दे और जनता भी अपने सामर्थ्य के अनुसार योगदान दें।
- गो माता हमारी परम मित्र है हम सभी संकल्प करें उनकी रक्षा का, उनसे मित्रवत वर्ताव करें गाय से प्रेम ही देश प्रेम है, अपनी संस्कृति और संस्कारों से प्रेम है व गो रक्षा हमारा परम धर्म है, गो रक्षा ही देश रक्षा है, गो माता का सम्मान करना भारत माता का सम्मान होगा।

अन्य शाखाएं एवं सेवा प्रकल्प

उत्तराखंड

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
गांव-बसोचांदपुर (गैंडीखाता)
जिला-हरिद्वार, उत्तराखंड
पिन कोड-246663

श्रीकृष्णायन देशी गोरक्षा एवं गोलोक धाम सेवा समिति
पोस्ट ऑफिस, पीली पड़ाव,
जिला - हरिद्वार

बायो-सीएनजी प्लांट
पोस्ट ऑफिस, नौरंगाबाद,
जिला - हरिद्वार
khad@krishnayangauraksha.org

उत्तर प्रदेश

गांव-सबलगाढ़ (भागूवाला)
जिला - बिजनौर, उत्तर प्रदेश
पिन कोड-246732

गांव- बरला
टोल टैक्स के पास, बरला हापुड़ हाईवे
जिला - मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)
पिन- 246732

मध्य प्रदेश

आदर्श गोशाला
लाल टिपारा, ग्वालियर, मध्य प्रदेश
पिन कोड-474006

श्री रेवा भागीरथी गोशाला खेरीघाट
रामगढ़, जिला - खरगोन (मध्य प्रदेश)

श्री कृष्णायन देशी गोरक्षा गोलोक धाम सेवा समिति
राम जानकी मंदिर, रानीघाट (बरहाना)
जिला - ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

स्वामी ईश्वर दास जी महाराज
(अध्यक्ष)
मोबाइल: 9412902268
स्वामी गणेशानंद जी महाराज
(सचिव)
मोबाइल: 8958942681